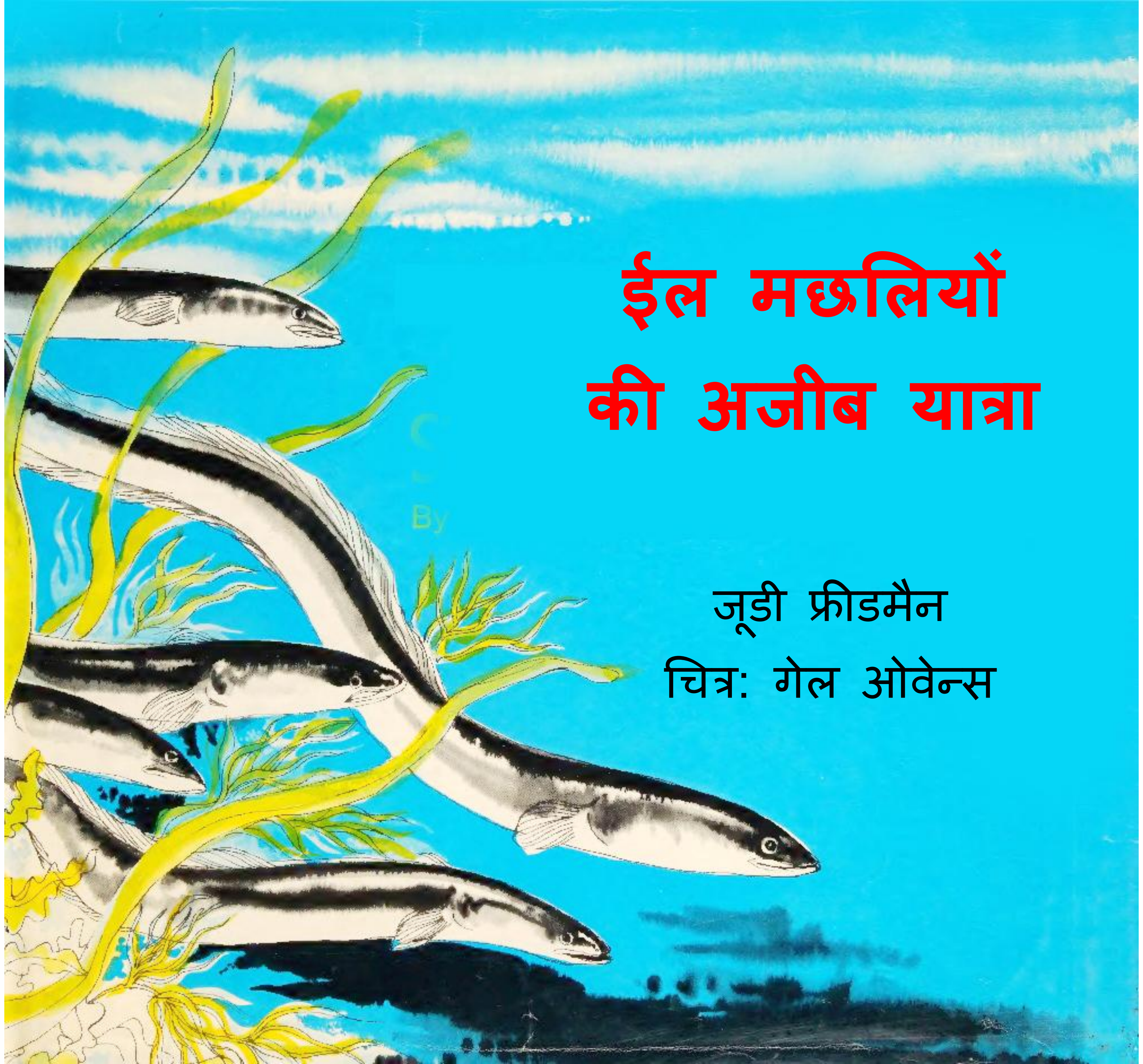


ईल मछलियों की अजीब यात्रा

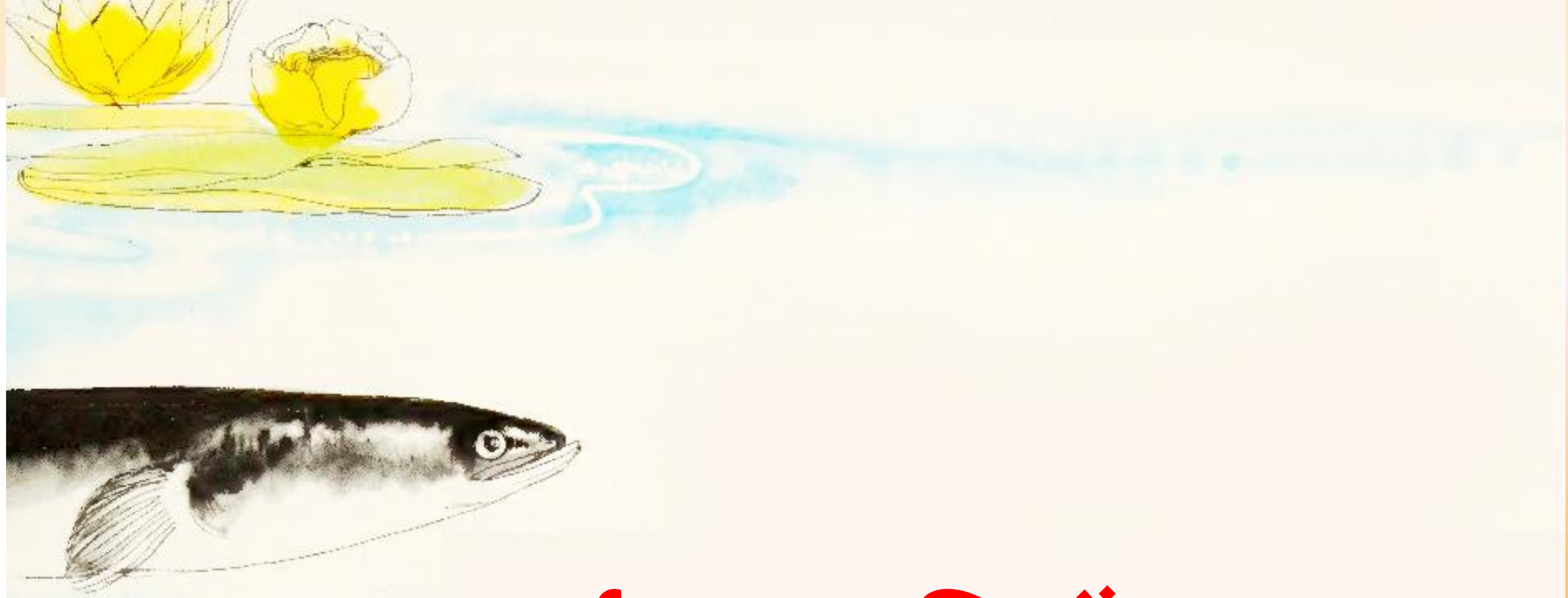
जूडी फ्रीडमैन

चित्र: गेल ओवेन्स

यह यात्रा सरगासो सागर के शैवाल से ढके पानी में शुरू होती है. वहीं ईल मछलियाँ पैदा होती हैं - छोटे जीव जो छोटे कांच के पत्तों जैसे दिखते हैं. पहले बहते हुए, फिर समुद्र की धाराओं के साथ तैरते हुए, वे अटलांटिक तटों तक पहुँचते हैं. फिर मादाएँ नदी में ऊपर की ओर जाती हैं, उनके शरीर बदलते हैं और वे नए मीठे पानी के माहौल के हिसाब से ढल जाते हैं. सालों बाद यही ईल मछलियाँ अपने तालाबों और झरनों को छोड़कर वापस अंडे देने के लिए उसी जगह जाती हैं जहाँ से यह रहस्यमयी यात्रा शुरू हुई थी, सरगासो सागर के भूरे शैवाल के नीचे.

गेल ओवेन्स के सुंदर चित्रों की मदद से, जूडी फ्रीडमैन युवा पाठकों को ईल मछलियों के प्रवास की अजीब कहानी से कुशलता से परिचित कराती हैं.





ईल मछलियों की अजीब यात्रा

जूडी फ्रीडमैन

चित्र: गेल ओवेन्स







हो सकता है कि आपके आस-पास के तालाबों, झीलों या नदियों में ईल मछलियाँ रहती हों. ईल एक लंबी, पतली, रेंगने वाली मछली होती है.



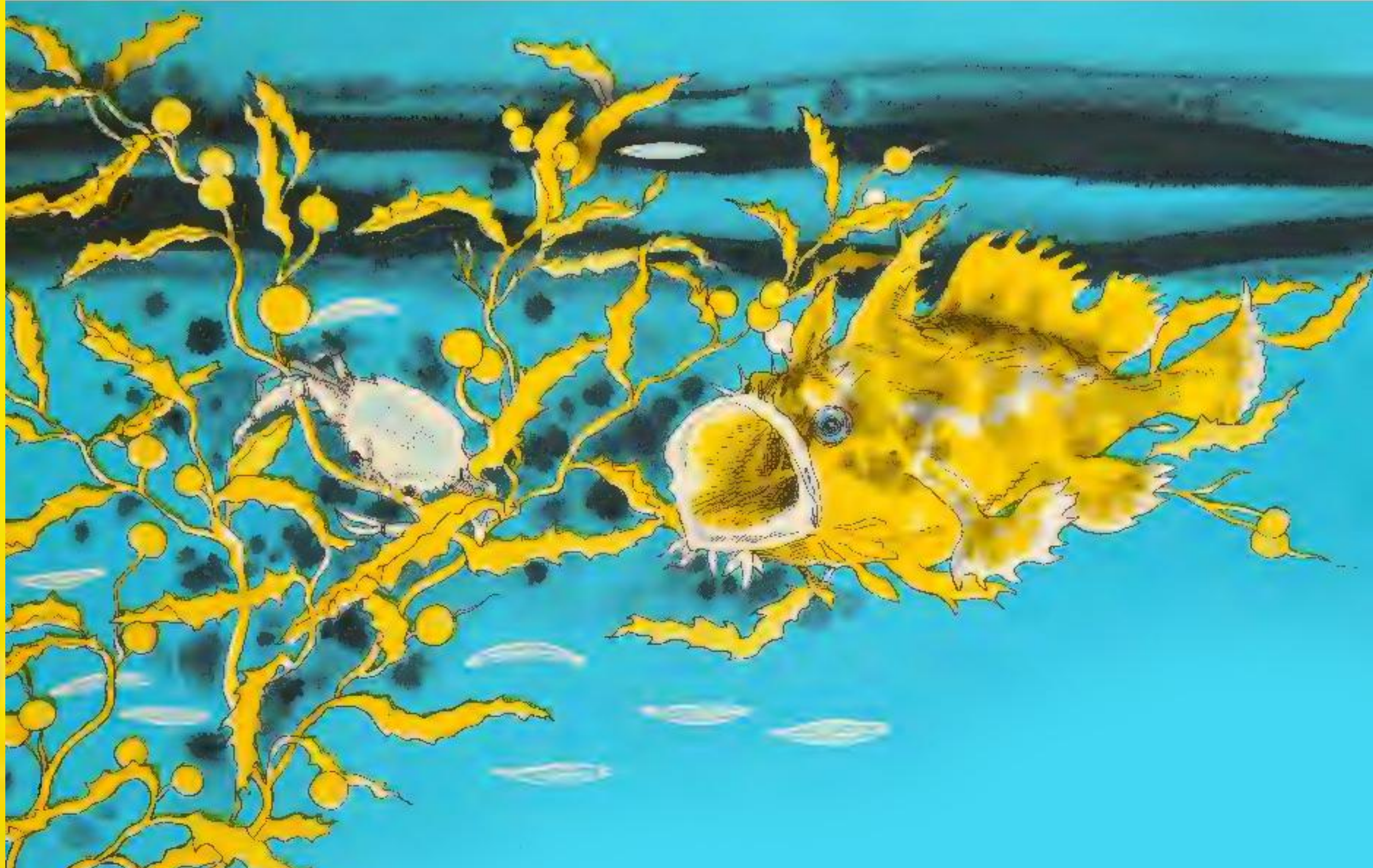
समुद्र में कुछ खास जगहें होती हैं जहाँ ईल मछलियाँ पैदा होती हैं. उत्तरी अमेरिका और यूरोप के अटलांटिक तट पर रहने वाली सभी ईल मछलियाँ समुद्र के एक गर्म, शांत इलाके में पैदा होती हैं जिसे सरगासो सागर कहा जाता है.



सरगासो सागर सुनहरे भूरे शैवाल से ढका हुआ है. वसंत की शुरुआत में मादा ईल मछलियाँ शैवाल के नीचे अंडे देती हैं. हर ईल मछली साठ लाख तक अंडे दे सकती है.

अंडे पानी में तैरते हैं. कई दिनों के बाद अंडों से छोटे जीव निकलते हैं. वे कांच के पत्तों जैसे दिखते हैं. ये ईल लार्वा आपकी सबसे छोटी उंगली के नाखून जितने लंबे होते हैं. वे अभी तैर नहीं सकते.





धीरे-धीरे छोटी ईल मछलियाँ सरगासो सागर के किनारे तक बहकर आती हैं. समुद्र की धाराएँ उन्हें बहा ले जाती हैं. मछलियाँ उनमें से बहुतों को खा जाती हैं. बाकी ठंडे पानी में मर जाती हैं. उनमें से ज़्यादातर महीनों और सालों तक समुद्र की धाराओं में बहती रहती हैं. वे प्लैंकटन नाम के छोटे समुद्री जानवरों और पौधों को खाती हैं.



जैसे-जैसे ईल मछलियाँ किनारे के पास आती हैं, वे बदल जाती हैं. वे पतली और छोटी हो जाती हैं. वे लगभग तीन इंच लंबी पतली बर्फ की डंडियों जैसी दिखती हैं. उन्हें "ग्लास ईल" कहा जाता है. अब, पहली बार, ईल मछलियाँ सच में तैर सकती हैं.

ईल मछलियाँ किनारे के पास उथले पानी की ओर तैरती हैं. प्लैंकटन खाने के बजाय, वे अब छोटे कीड़े और छोटी मछलियाँ खा सकती हैं. वे बहुत बड़ी और काली हो जाती हैं.

ज्वार और समुद्री लहरों की वजह से ईल आसानी से ज़मीन तक नहीं पहुँच पातीं. रात में ईल ऊपर की ओर तैरती हैं, जिससे आने वाला ज्वार उन्हें किनारे की ओर ले जाने में मदद करता है.





दिन में ईल पानी में और गहराई में चली जाती हैं.



जब वे तट पर पहुँचती हैं, तो ईल दो ग्रुप में बँट जाती हैं. एक ग्रुप समुद्र के किनारे खाड़ियों और छोटी खाड़ियों में रहता है. खाड़ियों और छोटी खाड़ियों का पानी खारा होता है. इनमें से ज़्यादातर ईल बड़ी होकर नर बनेंगी.

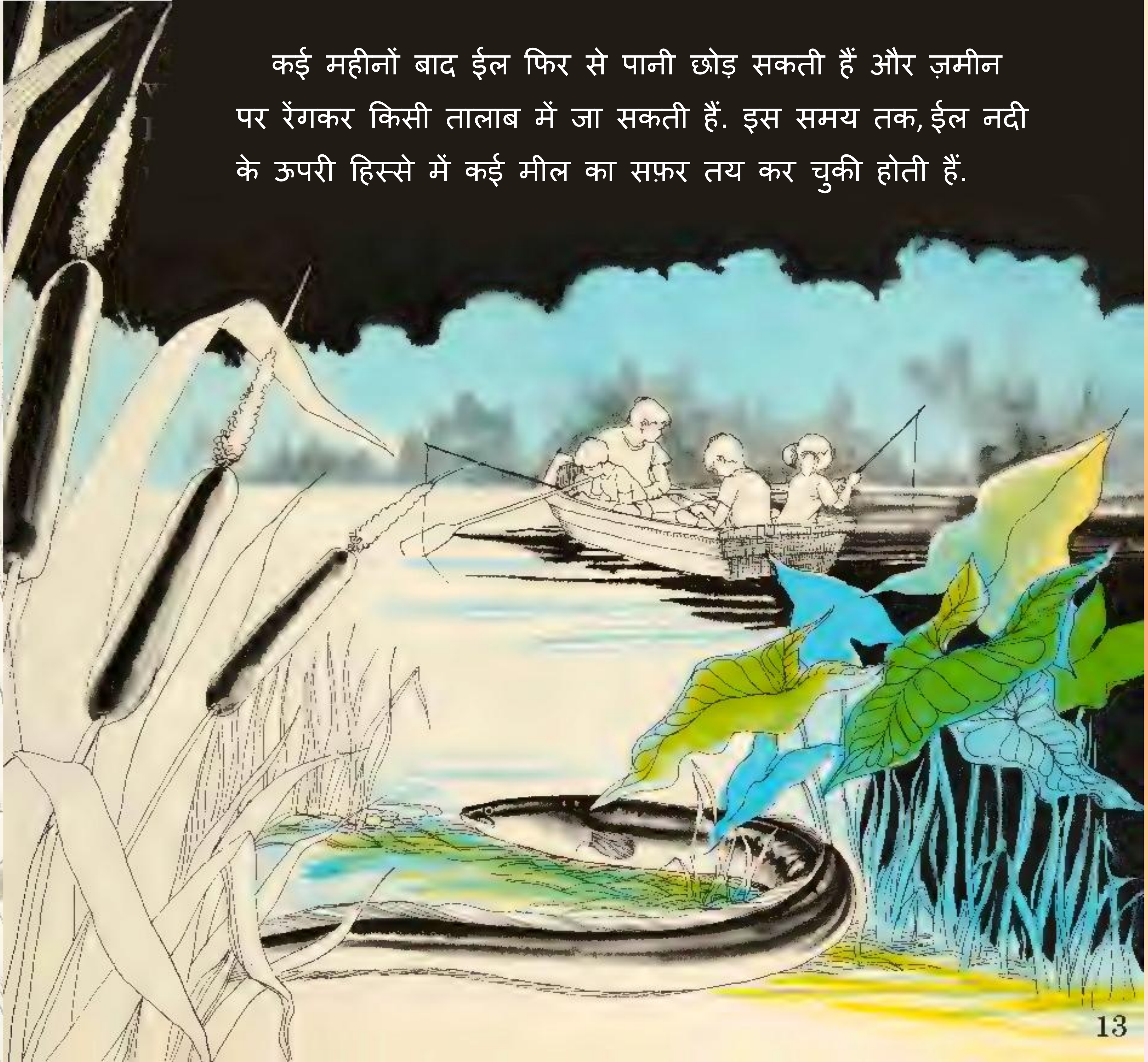


बाकी ईल आगे बढ़ती रहती हैं. उनमें से ज़्यादातर मादा बन जाएंगी. रात में चलते हुए, वे ताज़े पानी की ओर नदियों में तैरती हैं. धीरे-धीरे उनके शरीर में बदलाव आता है, ताकि वे ताज़े पानी में रह सकें. वे आगे बढ़ती रहती हैं.

अगर वे किसी बांध पर भी पहुँच जाती हैं, तो भी ईल आगे बढ़ती रहती हैं. वे बांध के किनारे पर रेंगकर ऊपर चढ़ जाती हैं. जब तक उनकी त्वचा नम रहती है, ईल पानी के बाहर रह सकती हैं. वे पूरे एक दिन तक पानी के बाहर रह सकती हैं. फिर वे बांध के ऊपर पानी में वापस चली जाती हैं.



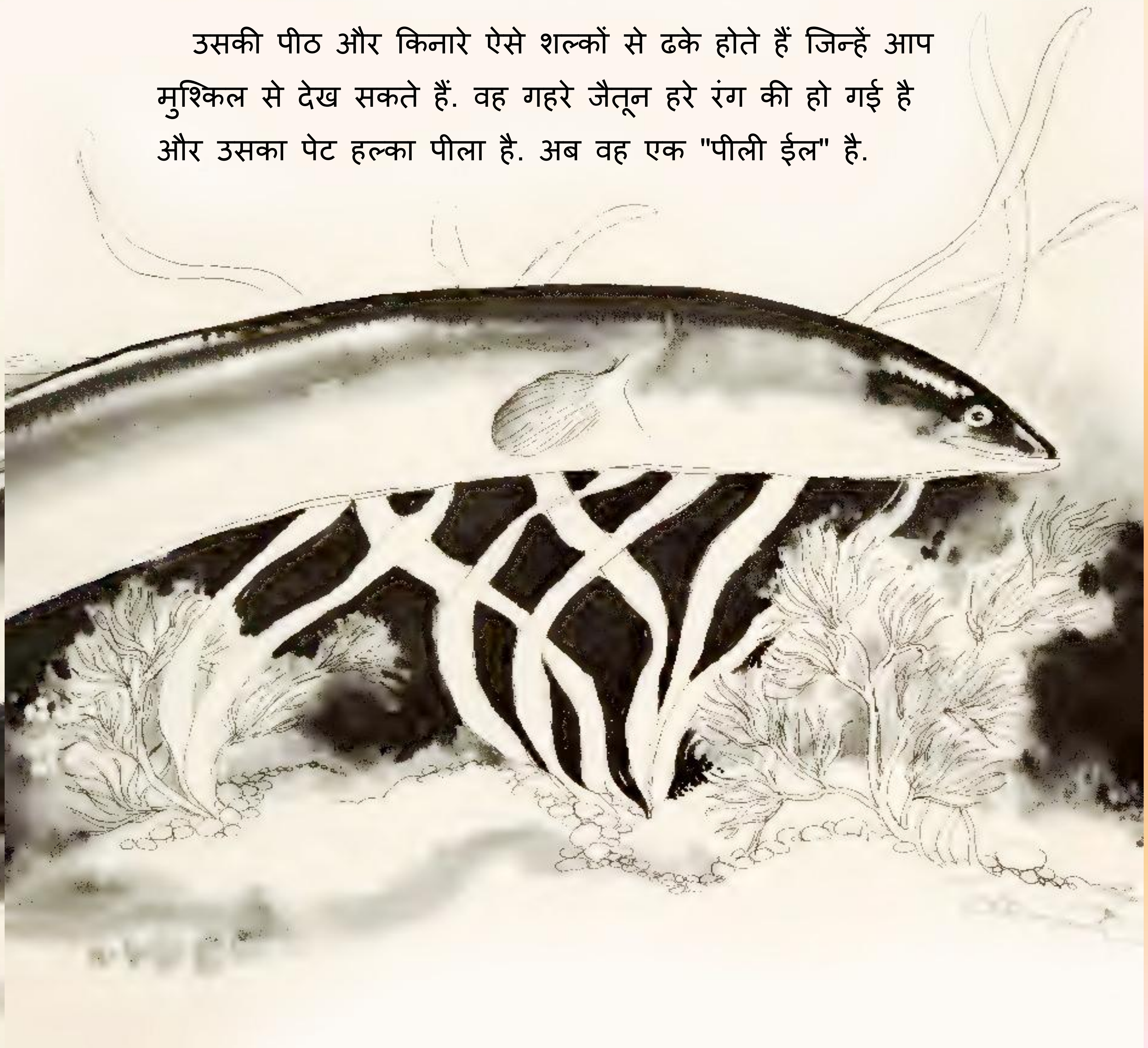
कई महीनों बाद ईल फिर से पानी छोड़ सकती हैं और ज़मीन पर रेंगकर किसी तालाब में जा सकती हैं. इस समय तक, ईल नदी के ऊपरी हिस्से में कई मील का सफ़र तय कर चुकी होती हैं.

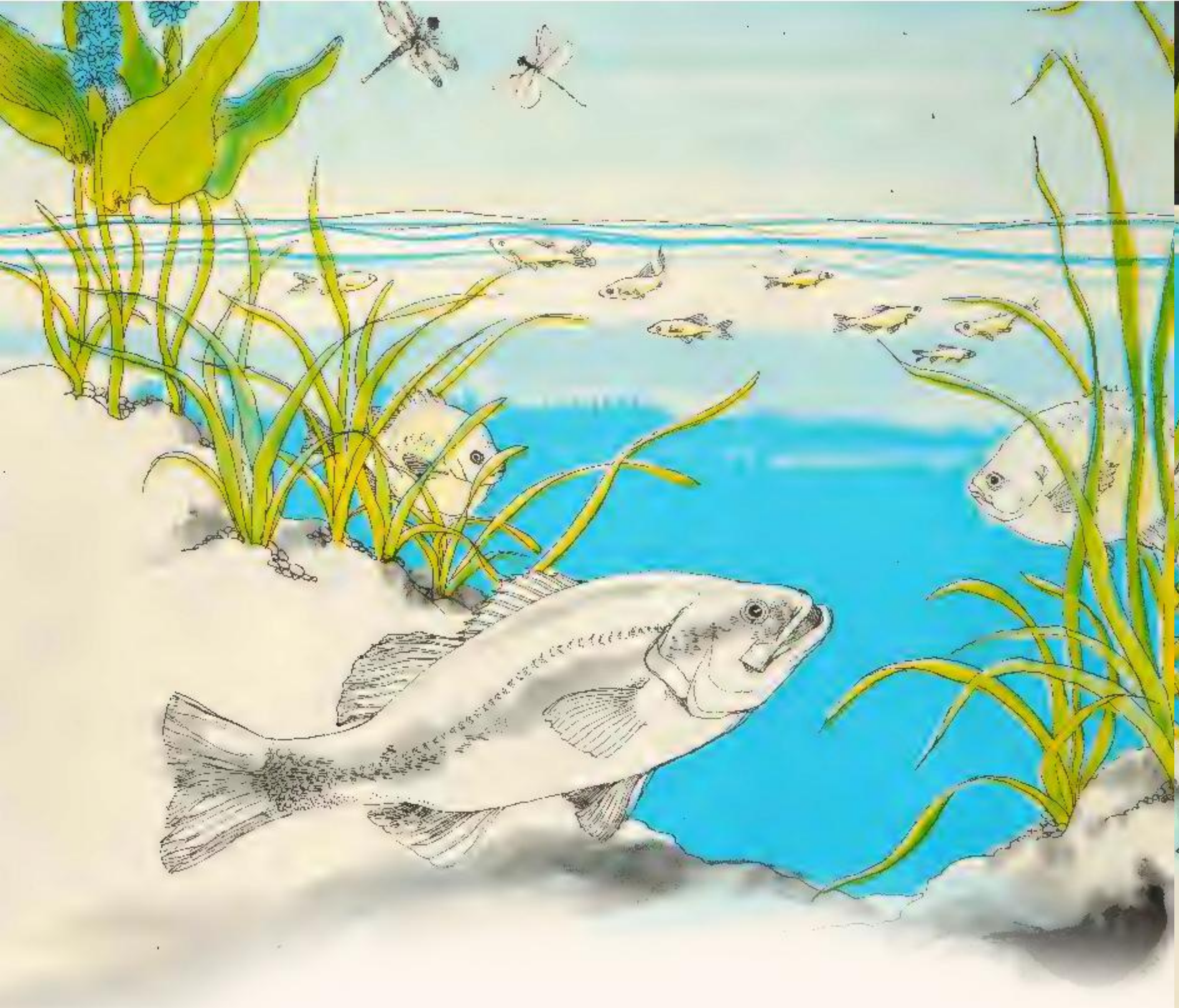


एक ईल (शायद एक मादा) अठारह साल तक तालाब के नीचे रह सकती है. वह तीन फ़ीट लंबी हो सकती है - लगभग उतनी ही लंबी जितनी आपकी लंबाई है!

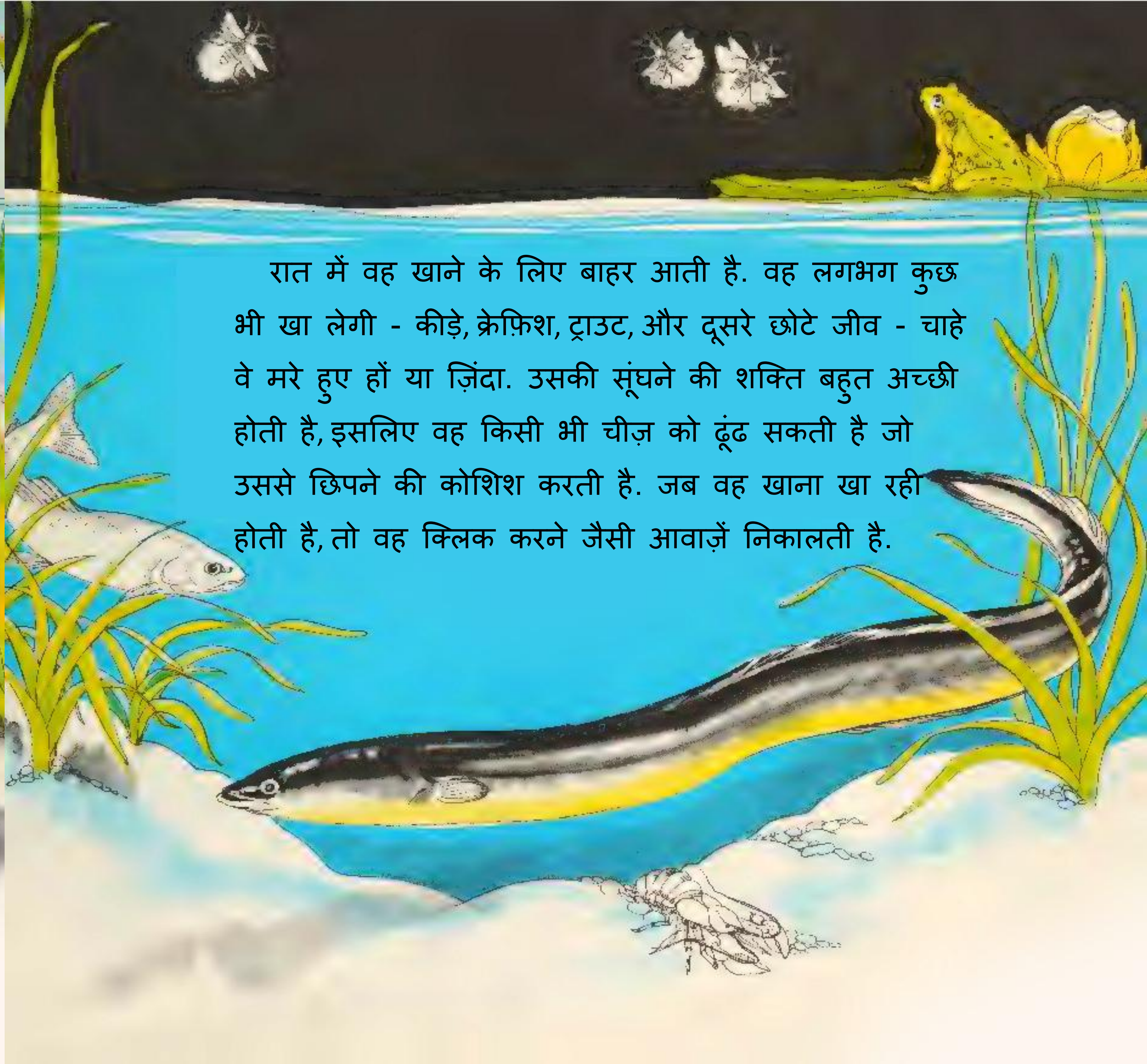


उसकी पीठ और किनारे ऐसे शल्कों से ढके होते हैं जिन्हें आप मुश्किल से देख सकते हैं. वह गहरे जैतून हरे रंग की हो गई है और उसका पेट हल्का पीला है. अब वह एक "पीली ईल" है.





दिन के समय, मादा ईल एक कीचड़ वाले गड्ढे में छिप जाती है.



रात में वह खाने के लिए बाहर आती है. वह लगभग कुछ भी खा लेगी - कीड़े, क्रेफ़िश, ट्राउट, और दूसरे छोटे जीव - चाहे वे मरे हुए हों या ज़िंदा. उसकी सूंघने की शक्ति बहुत अच्छी होती है, इसलिए वह किसी भी चीज़ को ढूंढ सकती है जो उससे छिपने की कोशिश करती है. जब वह खाना खा रही होती है, तो वह क्लिक करने जैसी आवाज़ें निकालती है.

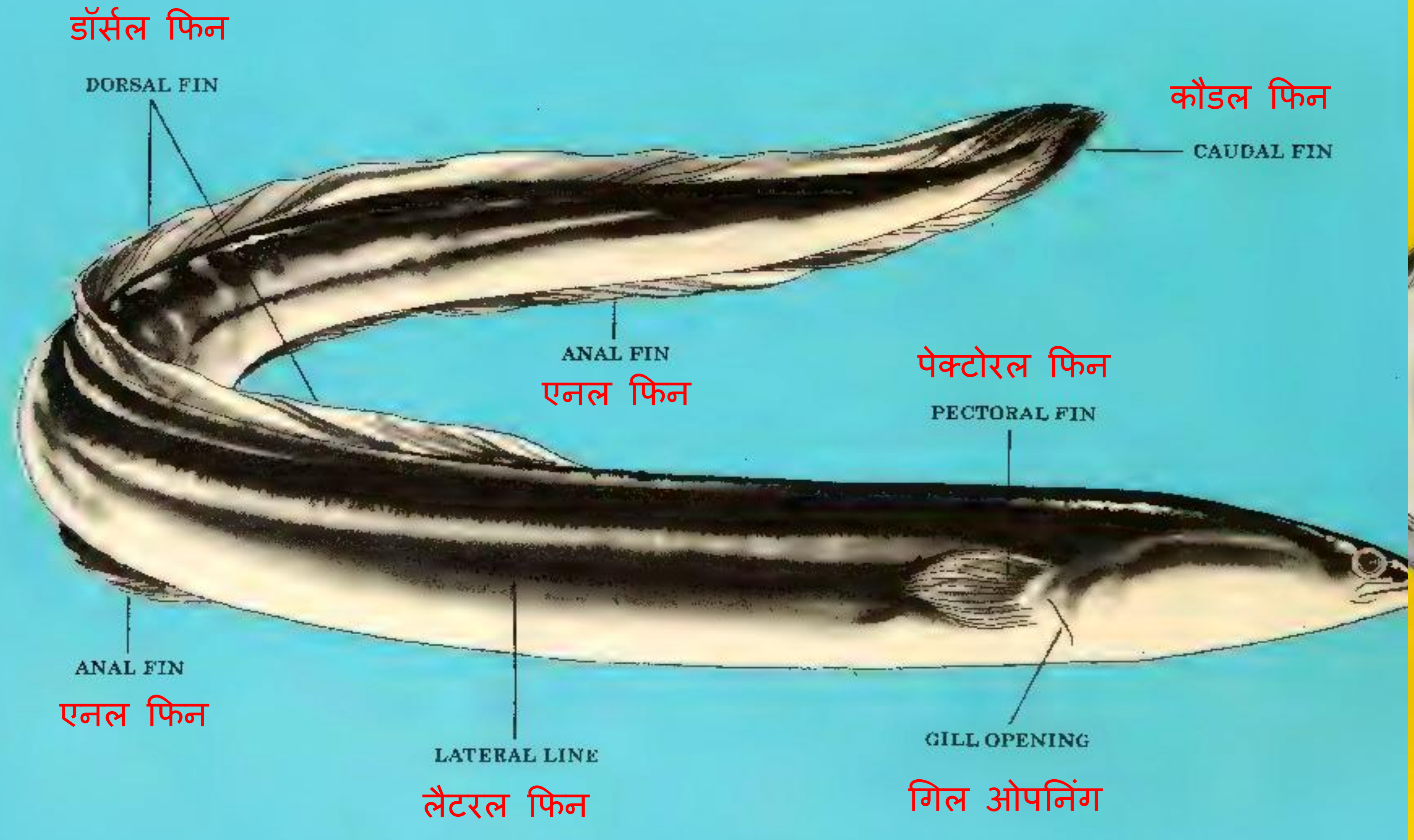




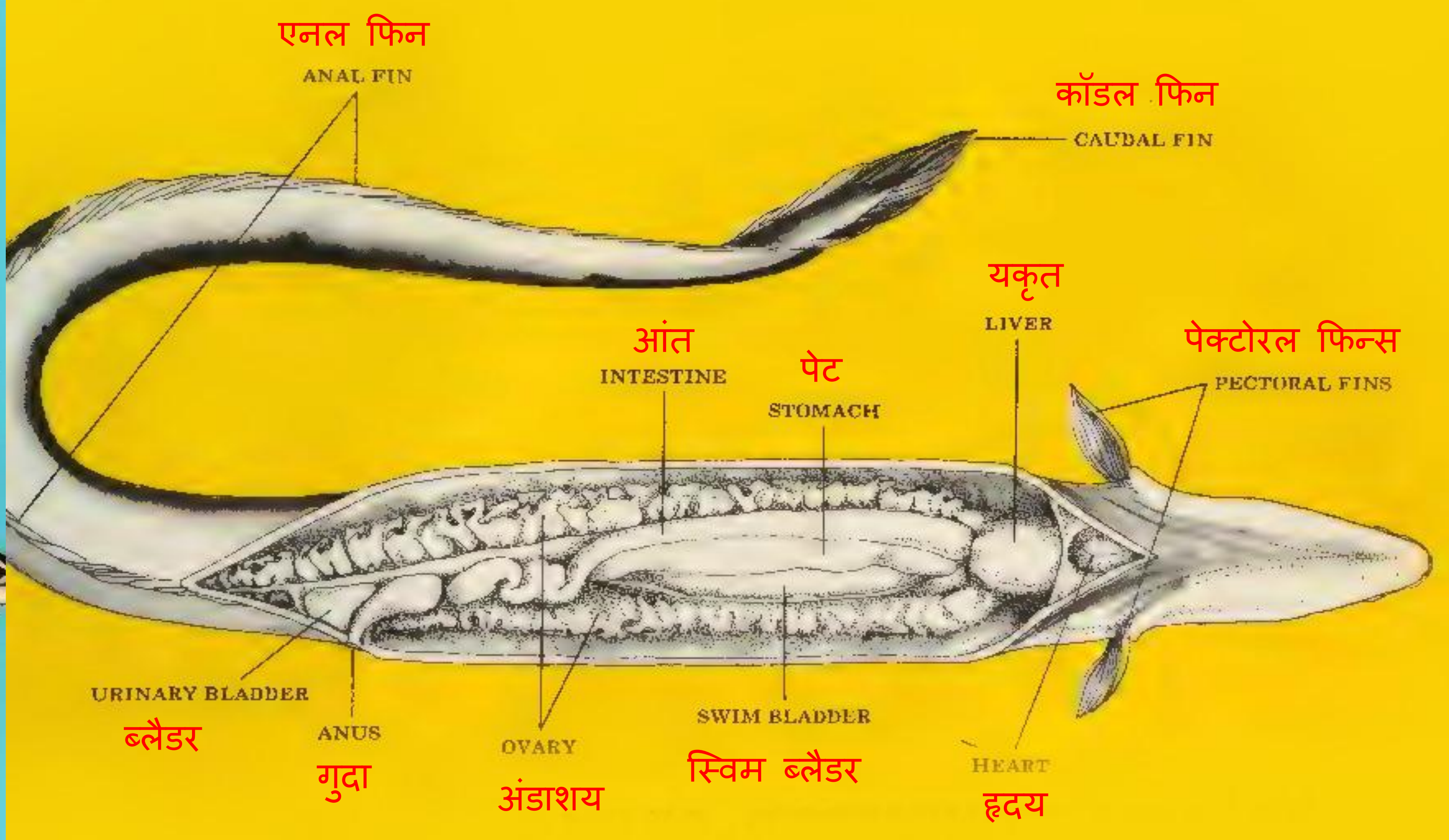
सर्दियों में ईल खुद को कीचड़ में दबा लेती है और वसंत तक वहीं रहती है. वह न तो खाती है और न ही हिलती-डुलती है. वह हाइबरनेशन में होती है.



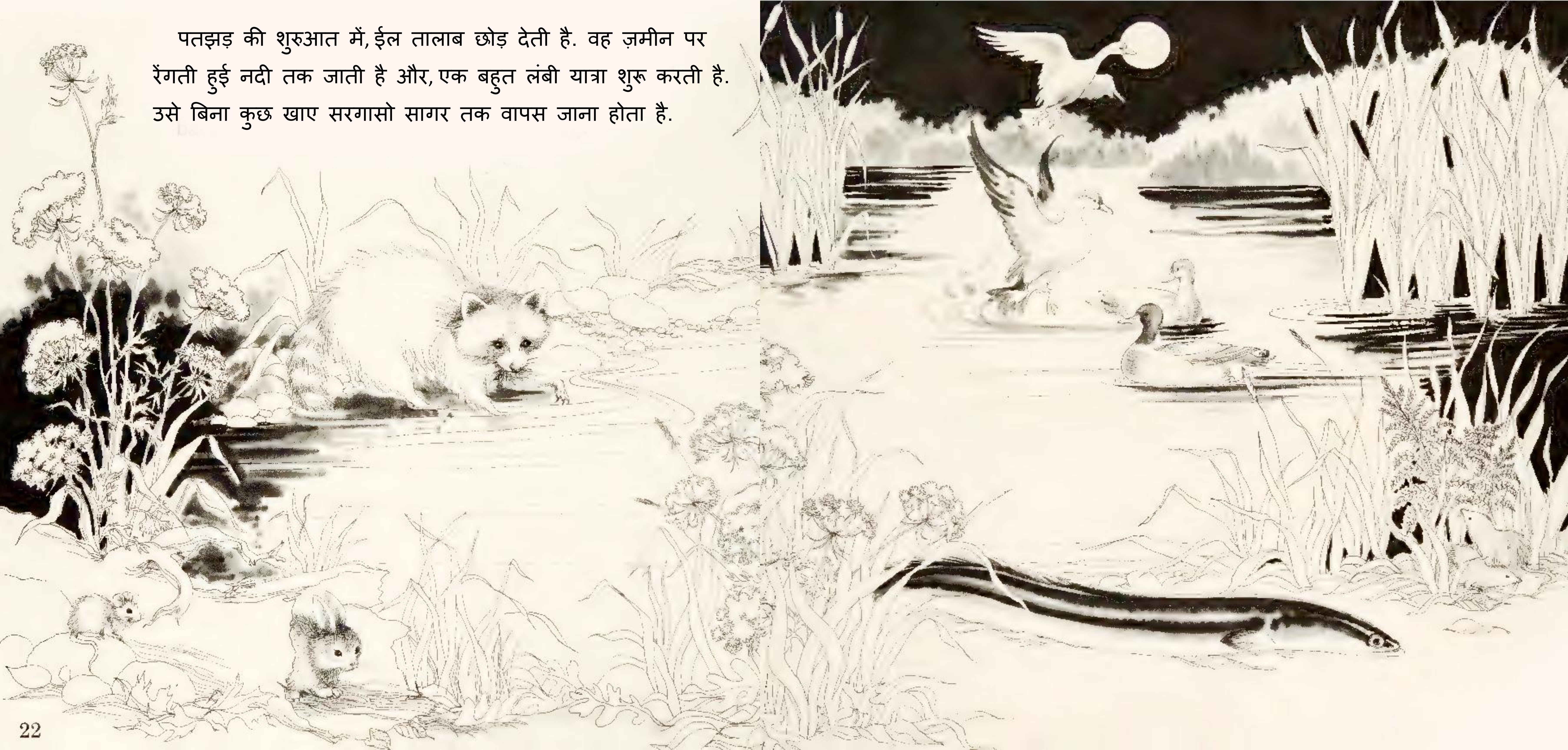
फिर, अपने दसवें और अठारहवें साल के बीच, ईल फिर से बदल जाती है. उसकी आँखें बड़ी हो जाती हैं. उसके पंख ज़्यादा काले हो जाते हैं और उसके शरीर के किनारे की रेखा गहरी हो जाती है. उसका निचला हिस्सा चाँदी की तरह चमकता है.



उसका पेट सबसे ज़्यादा बदलता है - यह धीरे-धीरे खराब होने लगता है. ईल शायद फिर कभी खाना नहीं खा पाएगी. उसके अंदर अंडे बनने लगते हैं. अब वह एक "चाँदी की ईल" बन गई है.



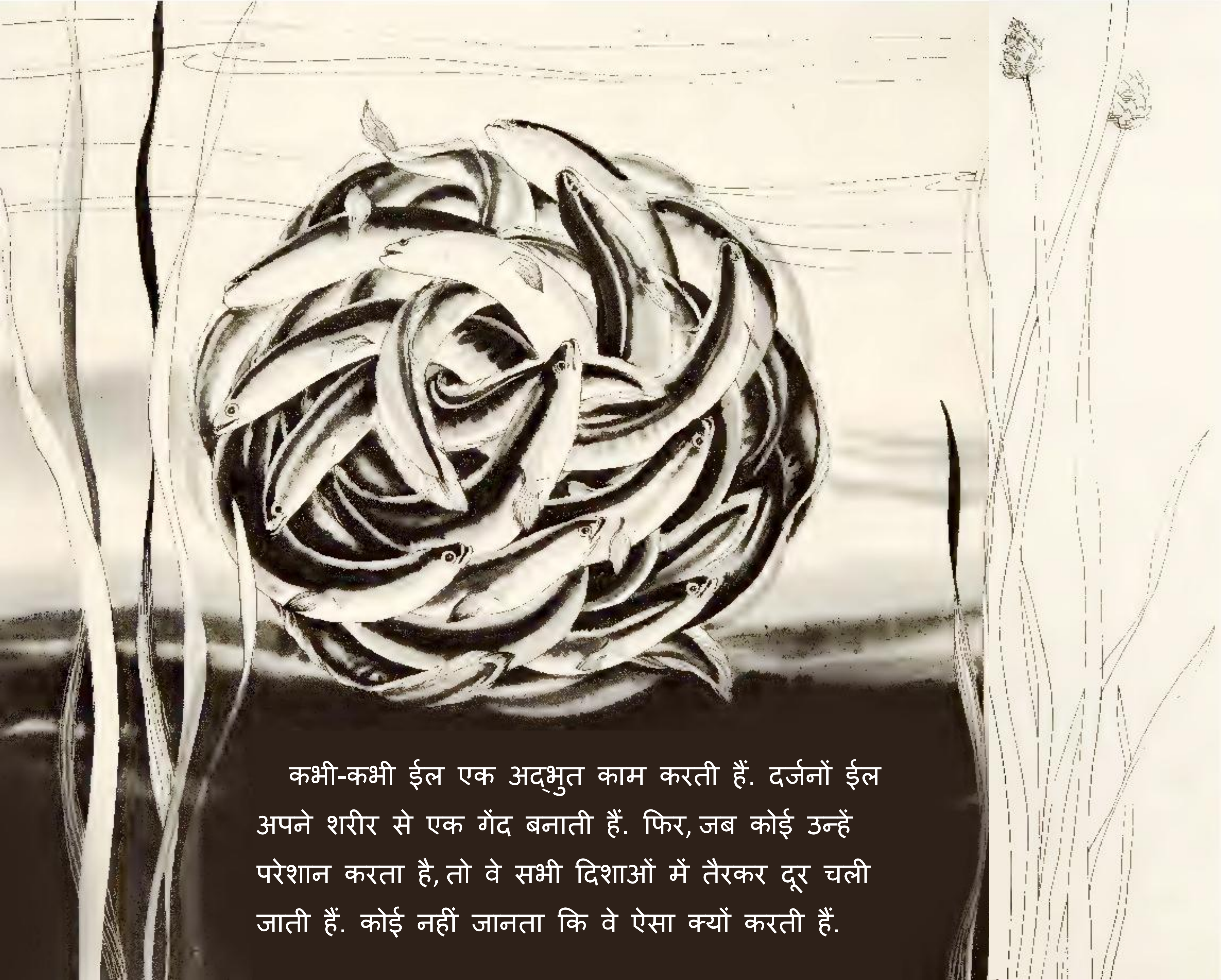
पतझड़ की शुरुआत में, ईल तालाब छोड़ देती है. वह ज़मीन पर रेंगती हुई नदी तक जाती है और, एक बहुत लंबी यात्रा शुरू करती है. उसे बिना कुछ खाए सरगासो सागर तक वापस जाना होता है.





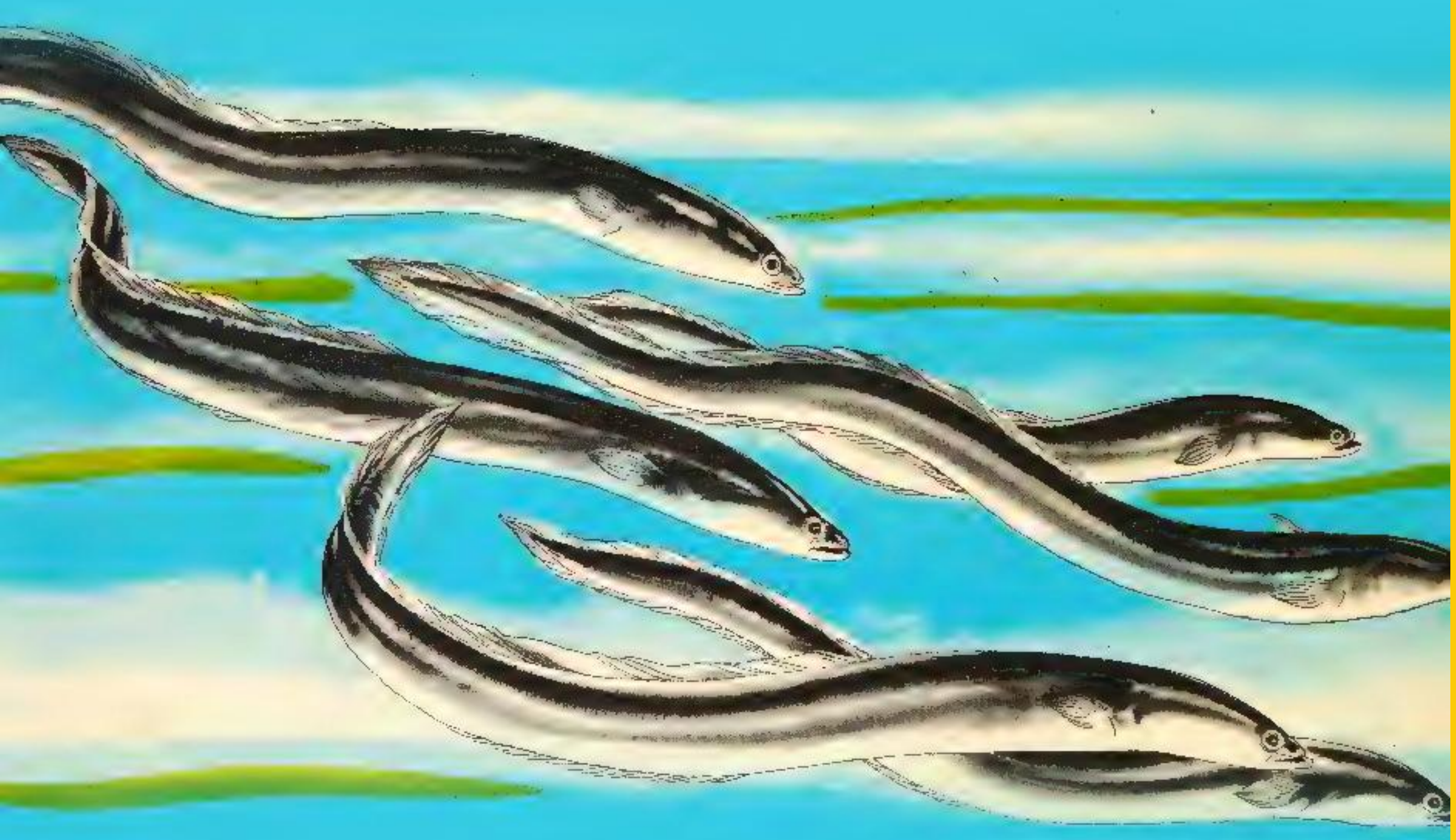


सैकड़ों झीलों और झरनों से सैकड़ों ईलें उस ईल से मिलती हैं जो कीचड़ वाले तालाब से आई थी. मादाएँ नदी के बहाव के साथ नीचे की ओर तैरती हैं, खेतों, कस्बों और शहरों से गुज़रती हैं. वे समुद्र की ओर तैरती हैं. जैसे-जैसे वे तैरती हैं, उनके शरीर में बदलाव आते हैं ताकि वे फिर से खारे पानी में रह सकें.



कभी-कभी ईल एक अद्‌भुत काम करती हैं. दर्जनों ईल अपने शरीर से एक गेंद बनाती हैं. फिर, जब कोई उन्हें परेशान करता है, तो वे सभी दिशाओं में तैरकर दूर चली जाती हैं. कोई नहीं जानता कि वे ऐसा क्यों करती हैं.

जब मादा ईल खारे पानी में पहुँचती हैं, तो सैकड़ों नर ईल उनसे मिलते हैं. कई सालों से नर ईल खारे पानी की खाड़ियों और छोटी खाड़ियों में रह रहे होते हैं. वे मादाओं से छोटे होते हैं, हालाँकि उनके शरीर में भी लगभग वैसे ही बदलाव हुए होते हैं. ये नर ईल अक्सर मादा ईल से छोटी उम्र के होते हैं. आमतौर पर, वे वही ईल नहीं होते जो सरगासो सागर से मादाओं के साथ आए थे.



ईल लगभग चार या पाँच महीने तक तैरकर सरगासो सागर वापस जाती हैं. जो मछलियों द्वारा नहीं खाई जातीं, वे उस जगह पहुँच जाती हैं जहाँ वे पैदा हुई थीं, सरगासो सागर.

बड़ी मादा सरगासो सागर में लगभग साठ लाख अंडे देती है. उसका साथी उन्हें फर्टिलाइज़ करता है. फिर, वैज्ञानिकों का मानना है, ईल मर जाती हैं. अंडे बढ़ने लगते हैं, और समुद्री शैवाल के नीचे से छोटी ईल निकलती हैं. ईल का जीवन चक्र - किनारे तक की लंबी यात्रा और, सालों बाद, सरगासो सागर में वापसी - फिर से शुरू हो जाता है. हजारों-हजारों सालों से ईल यही कर रही हैं.



वैज्ञानिकों ने ईल के बारे में बहुत कुछ सीखा है - कि उनका रंग बदलता है, कि उनके पेट फट जाते हैं, और कि वे महीनों तक बिना खाने के रहती हैं. लेकिन उनके पास अभी भी ईल के बारे में कई सवाल हैं. उनमें से कुछ ये हैं:

लाखों-करोड़ों ईल सरगासो सागर में आती हैं, लेकिन किसी ने भी वहाँ ज़िंदा या मरी हुई ईल नहीं पाई हैं. उनके साथ क्या होता है? ईल मछली सरगासो सागर में लौटते समय कौन सा रास्ता अपनाती हैं? उन्हें कभी भी वापस तैरते हुए किसी ने नहीं देखा है.

वे सरगासो सागर में वापस जाने का रास्ता कैसे ढूंढती हैं? क्या वे कुछ खास समुद्री धाराओं का पीछा करती हैं?

ईल मछलियों को सरगासो सागर में वापस जाने में ठीक कितना समय लगता है?

वे कितनी तेज़ी से तैरती हैं? क्या वे हर समय तैरती रहती हैं? क्या वे आराम करती हैं और समुद्री धाराओं का इस्तेमाल करती हैं? क्या सूरज की स्थिति उन्हें दिशा खोजने में मदद करती है?

उन्हें कैसे पता चलता है कि अंडे देने के लिए उन्हें सरगासो सागर में वापस जाना है?

पश्चिमी प्रशांत महासागर की ताज़े पानी की ईल मछलियाँ कुछ खास जगहों पर ही पैदा होती हैं. वे जगहें कहाँ हैं?



इन सवालों के जवाब किसी के पास नहीं हैं. किसी दिन आप एक वैज्ञानिक बन सकते हैं जो ईल और दूसरी मछलियों के बारे में जानेगा. आप एक इचिथियोलॉजिस्ट (मछली वैज्ञानिक) बनेंगे. आप ही वह हो सकते हैं जो यह पता लगाएगा कि ईल मछलियाँ हज़ारों-हज़ारों सालों से क्या कर रही हैं.

